।। जय जय दयानन्द ।। ।। जय माँ आनन्दमयी ।। ।। जय जय सम्पदानन्द ।।

।। शक्ति - साधना ।।

पं0 दिगम्बर झा (9279259790)

स्वयं अति सरल विधि से करें नवरात्र में शक्ति की उपासना

प्रथम संस्करण : संवत् 2072

प्रकाशक :
प्रज्ञा प्रकाशन

मूल्य : 30.00 रु. मात्र

।। जय जय दयानन्द ।। ।। जय माँ आनन्दमयी ।। ।। जय जय सम्पदानन्द ।।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्त्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा ।।

सादर समर्पित
स्मामी श्री श्री देवचन्द्र पाठक (करियन) के चरण-कमलों में
आंग्ल दिनांक : 23/8/2015

भूमिका

प्रफुल्लित मन से शक्ति-उपासकों के लिए शाक्ति-साधना प्रस्तुत करते हुए अतिशय आनन्दानुभूति कर रहा हूँ । यद्यपि इस पुस्तक का लेखन कार्य तो सन् 2012 ई0. में ही आरम्भ हो चुका था पर पाठकों तक पहुंचाने में 3 वर्ष लग गए ।

बाजार में अनेकों पूजा-पद्धति एक-से-एक उपलब्ध हैं जो विद्वानों के लिए बहुत उपयोगी भी सिद्ध होते हैं । पर जो विद्वानों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं वही पुस्तक सामान्य पुरोधाओं के लिए जटिल हो जाते हैं । सामान्य ज्ञानी पुरोधाओं के साथ थोड़ा-बहुत संस्कृत ज्ञान रखने वाले भक्तों के लिए भी एक ऐसी पुस्तक का सर्वथा अभाव है जिसके माध्यम से सहजतापूर्वक शक्ति की उपासना की जा सके। इन्हीं विचारों के साथ मेरे मन में इस पुस्तक को लिखने की भावना आई और गुरुकृपा से यह कार्य समयानुसार सम्पन्न भी हो गया । पुस्तक की आवश्यकता का आभास तब जाकर हुआ जब शारदीय नवरात्र (जो आश्विन माह में होता है) में ब्राह्मणाभाव चरम सीमा से भी अधिक होता है और यजमान खर्च करने के बाद भी उचित विधि से पूजनादि नहीं कर पाते या स्वयं करने को विवश हो जाते हैं पर सामान्य विधि के किसी पुस्तक का अभाव होने के कारण असंतुष्ट रहते हैं । कदाचित अर्थाभाव अथवा अतिकृपणता के कारण भी कुछ भक्त योग्य ब्राह्मणों को आचार्य के रूप में नियुक्त नहीं कर पाते ऐसा भी देखा जाता है । इन सभी विवशताओं

में शक्ति-साधकों के लिए यह पुस्तक अति उपयोगी सिद्ध होगा कारण कि पुस्तक को इन्हीं परिस्थितियों के कारण लिखा गया है । संस्कृत के जटिल मंत्रों को भी यथासंभव सरल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । पूजा गृह की तैयारी एवं कलश स्थापन की विधि को सचित्र अंकित किया गया है ।

वर्त्तमान समय में आमजन की बात कौन करे ब्राह्मण भी संस्कृत से दूरी बना चुके हैं । इस विकट स्थिति में अनेकों अच्छी पुस्तको का उपयोग घटने लगा है । इस कारण यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया है कि जनमानस की भावना का सम्मान करते हुए जटिलता को समाप्त कर सरलता अपनाई जाय पर इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं की संस्कृत से दूरी बढ़ेगी बल्कि इसके विपरीत यह खाई भी थोड़ा ही सही लेकिन घटेगी । ऐसा प्रयास करके मुझे आत्मसंतुष्टी मिलती है ।

टंकन दोष, अल्प ज्ञान आदि अनेक ऐसे कारण हैं कि पुस्तक में अशुद्धि होगी । विज्ञ जनो से आशीर्वाद के साथ सुधार का भी विश्वास है ।

पं0 दिगम्बर झा
23/8/2014

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
1. नवरात्रव्रत मुहूर्त्त निर्णय	6	13. गणेशाऽम्बिका पूजा	22
2. नवरात्र व्रत माहात्म्य	9	14. कलशस्थापन विधि	23
3. सप्तशती पाठ महिमा	11	15. दुर्गा पूजा	28
4. पूजन सामग्री	12	16. नवदुर्गा पूजन मंत्र	32
5. कलश स्थापन से एक दिन पहले	13	17. नवकुमारी पूजन मंत्र	33
6. पूजा से पहले	14	18. श्री भगवती स्तोत्रम्	34
7. पूजन व्यवस्था चित्र	15	19. आरती	35
8. पूजा विधान	16	20. पुष्पांजलि	35
9. स्वस्तिवाचन	17	21. हवन	36
10. पंचदेवता पूजा	19	22. सप्तशती हवन विशेष	40
11. विष्णु पूजा	20	23. दशमहाविद्या स्तोत्र	43
12. संकल्प	21	24. दुर्गा, काली व रुद्र गायत्री	43
		25. नवरात्र पंचांग	44

" नवरात्रव्रत - मुहूर्त्त निर्णय "

" शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी । तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ।।
सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।। "

ऐसे तो वर्ष में चार नवरात्र होते हैं - 1. चैत्र, 2. आषाढ़, 3. आश्विन और 4. माघ । लेकिन चारों नवरात्रों में शारदीय (आश्विन) नवरात्र का अपना विशेष महत्व है और इसी का महत्व सप्तशती के इस श्लोक में भगवती ने अपने मुखारविन्द से वर्णन किया है :

"जो भक्तगण श्रद्धा-भक्ति से शरत्कालीन नवरात्र में मेरी पूजा-अराधनादि करते हैं और माहात्म्य को भक्ति भाव से सुनते हैं वो मेरी कृपा से समस्त बाधाओं से मुक्त होकर धन, अन्न और संतानादि से सुशोभित होते हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है । "

इस कारण शारदीय नवरात्र की प्रासंगिता बढ़ जाती है एवं भक्तगण श्रद्धा-भक्ति-भाव युत होकर शारदीय नवरात्र व्रत-पूजनादि करते हैं । एकभुक्त, नक्त, फलाहार, निराहार, जलाहार, निर्जला आदि विधियों से श्रद्धालुओं को प्रतिवर्ष नवरात्र व्रत करते देखा जा रहा है । नवरात्रव्रत में चारों वर्णों को अधिकार प्राप्त है । स्नानादि कर राजोपचार, षोडशोपचार, दशोपचार पंचोपचार वा अभाव में जल-पुष्पादि से ही देवी की पूजा की जाती है । मानसपूजा का महत्व इन सबसे अधिक होता है ।

एकभुक्तेन नक्तेन तथैवाऽऽयाचितेन च । पूजनीया जनैर्देवी स्थाने स्थाने पुरे पुरे ।।

गृहे गृहे शक्तिपरे ग्रामे ग्रामे वने वने । स्नातैः प्रमुदितैर्हृष्टैर्ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपैः ।।
वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैः म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः। सम्यक्कल्पोदिता पूजां यदिकर्तुं न शक्नुयात् ।।
उपचारांस्तथा दातुं पञ्चैतान् वितरेत्तदा । गन्धं पुष्पं च धूपं च दीपं नैवेद्यमेव च ।।
अभावे पुष्प-तोयाभ्यां तदभावे तु भक्तिः ।।

नवरात्र-व्रत में सर्वत्र सूर्योदयकालीन तिथि के ग्रहण का निर्णय कहा गया है :-

भगवत्याः प्रवेशादि-विसर्गान्ताश्च याः क्रियाः। रवेरुदयगामिन्यां ताः सर्वाःकारयेद् बुधैः ।।

नवरात्र-व्रत में देवी का आवाहन-स्थापन-विसर्जन, पूजा-जप-पाठादि प्रातः काल ही करना चाहिए :-

प्रातरावाहयेत् देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत् । प्रातः प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत् ।।

स्थान में प्रतिमा पूजा होती है और वहां बिल्व रूपात्मिका दुर्गा भी स्थापित की जाती है । षष्ठी को सायंकाल बिल्वाभिमंत्रण कर अगले दिन सप्तमी को प्रातःकाल ही उन्हें लाना चाहिए साथ ही अन्य पत्रिका-प्रवेश भी प्रातः ही करनी चाहिए एवं पूजा भी करनी चाहिए । महानिशा पूजा में निशीथव्यापिनी अष्टमी ग्राह्य है । यदि दोनों दिन अष्टमी निशीथव्यापिनी हो तो अगले दिन नवमी युक्त ग्रहण करनी चाहिए । यदि सप्तमी युक्त अष्टमी निशीथव्यापिनी हो व अगले दिन निशीथव्यापिनी अष्टमी न हो तो सप्तमी युक्त अष्टमी ही ग्रहण करना चाहिए । यदि दोनों दिन में से किसी भी दिन **निशीथव्यापिनी** अष्टमी प्राप्त न हो तो सूर्योदयकालीन अष्टमी को महानिशापूजाकरनी चाहिए :-

पूर्वेद्युरपरेद्युश्चेन्निशीथव्यापिनी तिथिः । परेद्युरेव सा ग्राह्याऽऽष्टमी न सप्तमीयुता ।।

अष्टमी नवमीयुक्ता नवमी चाष्टमीयुता । अतीव सा प्रशस्ता स्यात् देव्याः पूजनकर्मणि ।।
महाष्टम्याश्विनेमासि शुक्ला कल्याणकारिणी । सप्तम्या संयुता कार्या मूलेन तु विशेषतः ।।
उभयत्र दिने न स्यात् निशीथव्यापिनी यदा । तथा परैव संग्राह्या रवेरुदयगामिनी ।।

विजयादशमी भी उदयगामिनी ही ग्राह्य है :-

सूर्योदये यदा राजन् दृश्यते दशमीतिथिः । आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां तां विदुर्बुधाः।।
उदये दशमी किंचित् सम्पूर्णैकादशी यदि । श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाऽभिधा ।।
ईषत् सन्ध्यामतिक्रान्तः किंचिदुद्भिन्नतारकः । विजयो नाम कालोऽयं सर्वकार्यार्थ सिद्धिदः ।।

अर्थात् देवी की पूजा पाठादि आदि श्रद्धालुओं को प्रातः काल ही सम्पन्न करना चाहिए । सम्प्रदाय विधानादि से काल परिवर्तन होते देखा जाता है । पर यह स्मरण रखना चाहिए कि किसी भी कार्य को उचित विधान से किया जाय तभी सफलता की आशा की जा सकती है अन्यथा व्यर्थ का परिश्रम ही होता है । साधकों को अनावश्यक परिश्रम, प्रदर्शनादि से पूर्णतः वंचित ही रहना चाहिए । प्रायः निशापूजा (जगरना) विवादास्पद ही रहता है जिसका कारण है अनेक प्रकार के पंचांगों द्वारा की गई गणना में अंतर आना, कुछ प्रभावपूर्ण पंडितों का वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास करना आदि । शक्ति-साधकों से मेरा नम्र निवेदन होगा कि आप इन सब के चक्कर में न परकर वेधसिद्ध पंचांगों के निर्णय को स्वीकार करें । अखबारों में छपने वाली तिथी, नक्षत्रादि प्रायः वेधसिद्ध होती है । साधकों के लिए प्रस्तुत पुस्तक में हम 2020 ई0 तक के शारदीय नवरात्र के लिए वेधसिद्ध मुहूर्त्त निर्णय भी दे रहे है ।

नवरात्र-व्रत-माहात्म्य

पुराणों में नवरात्र व्रत की बड़ी महिमा बताई गई है । सृष्टि के आरंभ से ही नवरात्र व्रत को ब्रह्मा, विष्णु आदि ने करना प्रारम्भ कर दिया था । वर्ष में यों तो चार नवरात्र होते हैं - चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ महीनों में लेकिन शारदीय नवरात्र इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण व प्रचलित है साथ ही वासन्तीय नवरात्र भी विशेष रूप से मनाया जाता है। नवरात्र व्रत का आध्यामिक महत्व तो है ही भौतिक महत्व भी कम नहीं है । जब ऋतु-संक्रमण का संक्रामक प्रभाव विशेष प्रभावशाली होता है और लोगों के स्वास्थ्य पर विशेष प्रतिकूल प्रभाव परने की संभावना रहती है उस समय में नवरात्र व्रत का अनुसरण अतिलाभदायक दिखता है । जब ठंड समाप्त होने लगती है और सूर्य की किरणों में तीव्रता आने लगती है और गर्मी का अनुभव होने लगता है; उस समय वसन्त ऋतु (चैत्र मास, उत्तर गोलारम्भ) में वासन्तीय नवरात्र होता है । जब गर्मी से परेशान हो रहे होते हैं और वर्षा ऋतु आरंभ होती है तो वर्षा ऋतु के कुप्रभाव को निष्फल करने के लिए आषाढ़ माह (याम्यायनारम्भ) में नवरात्र व्रत होता है । पुनः जब गर्मी और वर्षा का उमस समाप्त होते हुए ठंड का आरंभ होने लगता है तो आश्विन में (दक्षिण गोलारम्भ) शारदीय नवरात्र होता है और जब भयंकर ठंड का प्रकोप लोग झेल रहे होते हैं तो माघ मास (उत्तरायण आरम्भ) में पुनः नवरात्र व्रत होता है । यों तो अनेकों ग्रंथों में नवरात्र महिमा देखा जाता है पर श्रीमद्देवीभागवत में नवरात्र व्रत व शक्ति महिमा का विशेष वर्णन पाया जाता है ।

जब सीता हरणोपरांत श्री राम लक्ष्मण के साथ किष्किन्धा में शोकाकुल हो रहे थे उस समय नारद ऋषि आकाश मार्ग से आए और राम को समझाने लगे लेकिन राम का शोक कम नहीं हो रहा था । राम ने नारद जी से शोक निवारणार्थ शास्त्रसम्मत उपाय पूछा तो नारद ने शारदीय नवरात्रव्रत का उपदेश किया । नारद को ही आचार्य बनाकर श्री राम और

लक्ष्मण ने किष्किन्धा में शारदीय नवरात्र-व्रत किया । महाअष्टमी की अर्द्धरात्रि के समय सिंहवाहिनी मां दुर्गा दोनों भाईयों को दर्शन देकर दशग्रीववध का वर प्रदान किया । व्रतप्रभाव से श्री राम ने समुद्र पर पुल बांध कर रावणादि राक्षसों का संहार कर विभीषण को लंका का राज्य प्रदान किया और सीता के साथ पुनः अयोध्या का राज्य प्राप्त किया ।

वृत्तासुर वध करने के बाद इन्द्र ने ब्रह्महत्या निवारणार्थ भगवती की अराधना किया तब जाकर ब्रह्महत्या ने इन्द्र का पीछा छोड़ा। मधु और कैटभ से 5000 वर्षों तक युद्ध करते हुए जब भगवान विष्णु थक गए तो भगवती की अराधना करने लगे और उन्हीं की कृपा से मधु-कैटभ से उसी के वध का वर प्राप्त कर दोनों का वध किया । जब सूर्यकान्त मणि की खोज करते हुए श्रीकृष्ण जाम्बन्त के गुफा में प्रवेश कर गए और 27 दिनों तक लड़ते रहे तो बाहर खड़े पुरवासी 12 वें दिन वापस नगर जाकर यह समाचार वसुदेव व नगर के लोगों को दिया तो सभी शोकाकुल हो गए उसी समय नारद जी आकर नवरात्र-व्रत व देवी भागवत का उपदेश किये जिसका अनुष्ठान वसुदेव जी ने किया और श्री कृष्ण जाम्बन्त का हराकर मणि व जाम्बवती के साथ पुनः नगर प्रवेश किया ।

सुद्युम्न जब इला रूप में परिणत होकर वन में भटकते हुए बुध से पुरूरवा नामक पुत्र उत्पन्न करने के बाद अपना पुरुषत्व पुनः प्राप्त करने के लिए कुल गुरु वशिष्ठ जी से आग्रह किया तो वशिष्ठजी कैलाश पर जाकर भगवान शंकर की अराधना करने लगे । भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर इला को एक माह का प्ररुषत्व प्रदान किया । फिर इला पूर्ण पुरुषत्व सिद्ध्यर्थ शारदीय नवरात्र-व्रत का अनुष्ठान करते हुए देवी की अराधना व देवीभागवत पारायण करने लगे तो माता ने उसे पूर्ण पुरुषत्व का वरदान प्रदान किया ।

सप्तशती पाठ महिमा

वेदव्यास ने अष्टादश पुराणों की रचना की जिसमें से एक मार्कण्डेय पुराण है । मार्कण्डेय पुराण के शक्ति स्तुति परक 13 अध्यायों में 700 श्लोकों का संग्रह श्री दुर्गासप्तशती नाम से विख्यात है और घर-घर में विराजमान है । "**कलौ चण्डीमहेश्वरौ**" वचन से कलयुग में "शक्ति-साधना" का महत्त्व विशेष हो जाता है । "शक्ति-साधना" में श्री दुर्गासप्तशती पाठ की विशेष महत्ता है। इसके पाठ का महत्त्व मां ने अपने मुखारविन्द से बारहवें अध्याय में देवताओं को इस प्रकार कहा है -

" एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः । तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यशंसयम् "

जो मनुष्य भक्ति-भाव से नित्य इस स्तुति (श्री दुर्गा सप्तशती) द्वारा मेरा स्तवन करता है मैं उसके समस्त बाधाओं का नाश करती हूँ; इसमें कोई संशय नहीं है ।

इससे पूर्व चतुर्थ अध्याय में महिषासुर का वध करने पर देवताओं ने माता की स्तुति किया तो माता ने उनसे वरदान मांगने को कहा । देवताओं ने माता से ये वर मांगा कि हे मां यदि आप वास्तव में प्रसन्न हैं तो हमें यह वर दें कि -

मैं जब कभी आपत्ति के समय आपका स्मरण करूं आप तत्क्षण मेरी आपत्तियों का पुनः निवारण करना, और हे अमलानने समस्त भूमण्डल में जो भी मनुय इस स्तुति से आपका स्तवनकरे आप उसके धन, वैभव, स्त्री-पुत्रादि, सम्पदा आदि की वृद्धि करते रहना ।

" यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि । संस्मृता-संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ।।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने । तस्य वित्तर्द्धविभवैः धनदारादि सम्पदाम् ।।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाऽम्बिके ।।

पूजन-सामग्री

प्रत्येक वस्तु की गुणवत्ता परख कर ही खरीदें अर्थात् कोई वस्तु ऐसा न लें जो खाने-पहनने की हो पर खाने या पहनने लायक न हो । विशेष रूप से घी, पंचमेवा, सुपारी, कपड़ा, शृंगार सामग्री, तिल जौ, चावल, सिंदूर, अगरबत्ती आदि को अवश्य जाँच लें। कलशस्थापन सामग्री अलग से है, जो कलश स्थापित न करते हों वो कलशस्थापन सामग्री नहीं लेंगे।

कलशस्थापन सामग्री :- कलश, ढ़कनी, नारियल, सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, सर्वौषधि, पंचरत्न, जौ, मिट्टी, तांबे का पैसा, आम्र पल्लव।

पूजन सामग्री :- अखण्ड दीप, सामान्य दीप(पीतल या पत्थर का), रुई बत्ती, नारियल (छिला हुआ), अरबा चावल - 500 ग्राम, तिल, जौ, पीली सड़सों, रोली, सिंदूर, रक्तचंदन व चंड़ौटा, अगरबत्ती, सलाई, धूप, धूना, गुग्गुल, कर्पूर, पान, सुपाड़ी जायफल, हल्दी गांठ, घी, शक्कड़, मधु, पंचमेवा, मिश्री व बतासा, नैवेद्य वास्ते यथासंभव फल एवं मिठाई प्रतिदिन, माता की प्रतिमा या फोटो, आसनी, सप्तशती, रेहल, रुद्राक्ष या रक्तचंदन की माला, गोमुखी, लाल कपड़ा, साड़ी-साया-ब्लॉज, चुनड़ी चौकी, जनेऊ, डांरकडोर ।

शृंगार सामग्री - ऐना, कंघी, अलता, केश रबड़, साबुन, गुलाबजल, पाउडर, लहठी या चूड़ी, स्प्रे, काजल, मेंहदी आदि।

गंगाजल, दूध, दही, धूप जलाने वास्ते गोयठा, पूजा की थाली, नैवद्य एवं पंचामृत वास्ते थाली-कटोरी, फूलडाली फूल, बेलपत्र, तुलसी, दूभी, गाय का गोबर, अगरबत्ती स्टैंड, धूपदानी, पंचपात्र, आचमनी, आवश्यकतानुसार अन्य थाली-कटोरी-लोटा आदि, स्वयं के लिए शुद्ध पीला या लाल वस्त्र, पवित्री ।

हवन सामग्री :- शाकल्य, घी, स्रुवा, पान, सुपाड़ी, उड़द, दही, गरीगोला, लाल कपड़ा, नवग्रह लकड़ी, गोयठा, चेलखी।

कलस्थापन से एक दिन पहले

1. शारीरिक और मानसिक शुद्धि करें । नख-बाल कटा लें, पंचगव्यपान, गंगास्नान आदि करके मन को भगवति के चरणों में लगावें । असत्य, निंदा, अभक्ष्य-भक्षण, चुगली, काम-क्रोध-लोभादि दोषों का यथासंभव त्याग कर दें । तामसिक पदार्थों का सेवन बंद कर दें । ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लें । पूजन-गृह की सफाई भी कर लें ।
2. गंगाजल, मिट्टी आदि पूजन-सामग्री की व्यवस्था कर लें । दही जमने दे दें, चौरठ वास्ते चावल फूलने दे दें, पंचपल्लव या आम्रपल्लव, बेलपत्र, तुलसी (फूल छोड़कर) आदि कच्चे सामानों की व्यवस्था कर लें ।
3. प्रतिमा, फोटो आदि जैसी व्यवस्था हो उपलब्ध कर लें ।
4. धूना एवं गुग्गुल को चूर्ण कर धूप में मिला दें , घी भी आवश्यकतानुसार मिला दें ।
5. लाल कपड़े को नारियल, फोटो, पुस्तक, चौकी वास्ते उचित आकार में काट लें ।

पूजा के पहले

1. पूजन गृह यदि कच्ची हो तो गाय के गोबड़ से चौका करें, पक्की हो तो यथाविधि साफ कर लें । फूल, माला, दूध आदि कच्चे वस्तुओं की व्यवस्था कर लें । स्त्रियों को हाथ पैर रंगकर खोंयछा भी लेना चाहिए ।
2. स्नानादि के बाद पूजा जनेऊं, डांरकडोर आदि बदल लें, तिलक लगा लें, शिखा बांध लें, भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर न्यूनतम 10 बार गायत्री मंत्र या गुरु मंत्र का जप कर लें ।
3. थाली में अरबा चावल, तिल, जौ, रोली, सिंदूर आदि थोड़ा-थोड़ा सजा लें, जलपात्र में जल ले लें, फूलडाली में फूल-माला बेलपत्र, दूभी, तुलसी आदि रख लें । कटोरी में थोड़ा पंचामृत बना लें । रक्तचंदन घिस कर थाली में रख लें ।
4. अगले पृष्ठ के चित्रानुसार कमरे के किसी एक दीवार के पास चौकी में कपड़ा बांध कर रखें, फोटो में चुनड़ी मौली से बांधकर दीवार के सहारे पीढ़िया या चौकी पर स्थापित करें । फोटो पूर्व या पश्चिम अथवा दक्षिणाभिमुखी भी रख सकते हैं पर उत्तराभिमुखी न रखें, अपना आसन पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख लगायें । गणेशाम्बिका वास्ते एक कटोरी में चाबल भरकर चौकी पर ही रखें, उसमें सिन्दूर आदि से अष्टदल बना दें। एक सुपाड़ी में मौली लपेट कर कटोरी में रख दें और थोड़ा सा गाय का गोबड़ भी दे दें (यदि गाय का गोबड़ अनुपलब्ध हो तो एक और सुपाड़ी मौली लपेट कर रखें) । पंचदेवता व विष्णु वास्ते उसी चौकी पर दो सुपाड़ी रख दें। छिले हुए नारियल में लाल कपड़ा लपेटकर माता के समक्ष रक्ष दें ।
5. माता के वाम भाग में अखण्डदीप लगाएं, दाहिने अगरबत्ती और धूप तथा सामने नैवेद्य लगा दें । नैवेद्य में मेवा, मिठाई फल के साथ पान, सुपाड़ी, लौंग, इलायची भी दे दें । इसी तरह एक और थाली में 6 भाग करके नैवेद्य लगा दे । अखण्डदीप के अलावे एक और दीप भी जलाएं और माता के दाहिने ओर रखें । दीप के नीचे आसन अवश्य दें ।

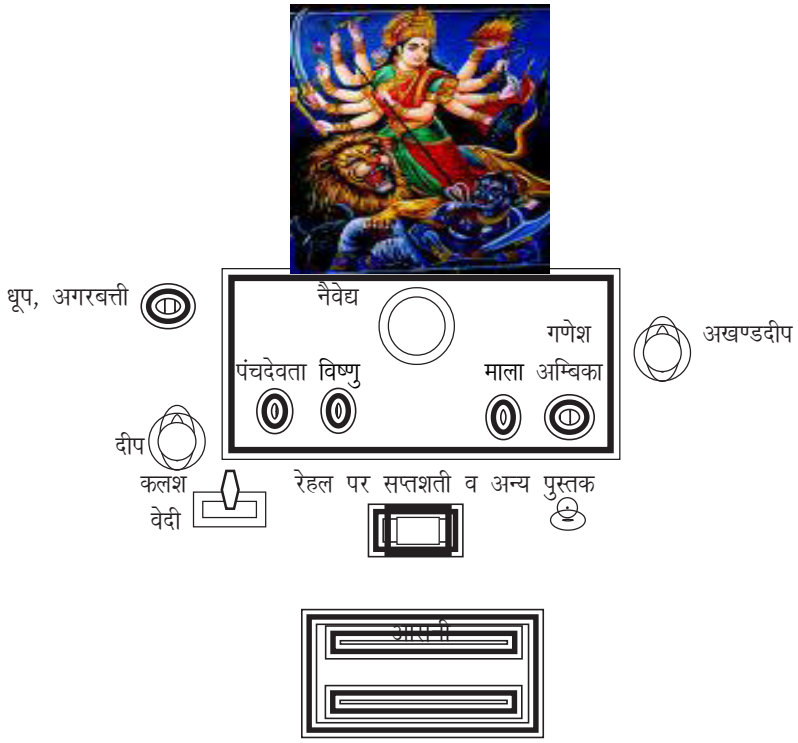

पूजा-विधान

आसन पर बैठकर गंगाजल से अगले मंत्रों से 3 बार आचमन करें -

आचमन :- **1. ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः ।**

तीन आचमन करके अँगूठे के मूल से ओठ पोछकर निम्न मंत्र से हाथ धोये : **ॐ हृषीकेशाय नमः ।**

पवित्रीधारण :- **ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छ केयम् ।।**

पवित्रीकरण :- जल लेकर शरीर एवं पूजनोपकरणों पर पर छिड़कें :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याऽभ्यंतरः शुचिः।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।।

आसनशुद्धि : **ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवी त्वं विष्णुनाधृता। त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रंकुरु चासनम्।।**

दिग्बन्धन : बांये हाथ में पीली सड़सों, तिल, जौ लेकर दांये हाथ से ढंककर अगले मंत्र को पढ़े :-

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः। ये भूता विघ्न कर्त्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषां अविरोधेन नवरात्र समारभे ।।

अब दांये हाथ से थोड़ा-थोड़ा पीली सड़सों आदि लेकर पूर्वादि दशों दिशाओं में छिड़कें -

ॐ प्राच्यै नमः।। पूर्व।। **ॐ आग्नेयै नमः।।** अग्निकोण।। **ॐ याम्यै नमः।।** दक्षिण।। **ॐ नैर्ऋतये नमः।।** नैर्ऋत्यकोण।। **ॐ प्रतीच्यै नमः।।** पश्चिम।। **ॐ वायव्यै नमः।।** वायव्यकोण।। **ॐ उदीच्यै नमः।।** उत्तर।। **ॐ ऐशान्यै नमः।।** ईशानकोण।। **ॐ उर्ध्वायै नमः।।** ऊपर।। **ॐ भूम्यै नमः।।** नीचे।।

सावित्री, गायत्री अथवा नवार्ण मंत्र जपते हुए तीन बार प्राणायाम करें ।

स्वतिवाचन : दाहिने हाथ में अक्षत-फूल लेकर अगले मंत्रों को पढ़ें :-

हरिः ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्म मनवः सूर चक्षषो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ग्गूं सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषता युर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जात मदितिर्जनित्त्वम्।। द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ग्गूं शान्तिः पृथिवि शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ग्गूं शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन् महागणाधिपतये नमः ।। लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः ।। वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः ।। शची पुरन्दराभ्यां नमः ।। उमा महेश्वराभ्यां नमः ।। महाकाल्यै नमः ।। महालक्ष्म्यै नमः ।। महासरस्वत्यै नमः ।। श्री दुर्गा देव्यै नमः ।। मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।। ग्राम देवताभ्यो नमः ।। स्थान देवताभ्यो नमः ।। वास्तु देवताभ्यो नमः ।। कुल देवताभ्यो नमः ।। इष्ट देवताभ्यो नमः ।। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।। सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः ।। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।।

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः । द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजं । प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधि पतये नमः ।।
सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ।।
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मी पतेर्तेङ्घ्रि युगं स्मरामि ।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।
अनन्याँश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।
स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवं। वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानी मणिकर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कामार्थ सिद्धये ।।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन् महागणाधिपतये नमः ।।

ॐ शान्तिःशान्तिःशान्तिः ।। सुशान्तिर्भवतु ।। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ।।

अक्षत को अक्षत में मिला दें और फूल को फूल में मिला दें ।

पंचदेवता और विष्णु के निमित्त रखे हुए सुपाड़ी पर पंचदेवता और विष्णु की पूजा करे ।

पंचदेवता पूजा

अक्षत लेकर आवाहन करे : **इदं अक्षतं ॐ सूर्यादि पंचदेवताः इहाऽगच्छत इहतिष्ठत ।।**

आवाहन प्रथम दिन ही करना है अन्य दिनों नहीं ।

जल : **एतानि पाद्यार्घ आचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।।**

चन्दन : **इदं चन्दनं अनुलेपनं ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।।**

पुष्प : **इदं पुष्पं ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।।**

अक्षत : **इदं अक्षतं ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।।**

जल : **एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथाभाग नैवेद्यानि ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।।**

जल : **आचमनीयं ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।।**

पुष्पांजलि : **एष पुष्पांजलि ॐ सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।। ॐ सूर्यादि पंचदेवताः पूजितास्थ प्रसीदत प्रसन्नाः भवत क्षमध्वं।।**

विष्णु पूजा

तिल जौ लेकर आवाहन करे : **एते यव तिलाः ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्री विष्णो इहाऽगच्छ इह तिष्ठ।।**

आवाहन प्रथम दिन ही करना है अन्य दिनों नहीं । स्त्रियों को विष्णु पूजा नहीं करना है ।

जल : **एतानि पाद्यार्घ आचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः।।**

चन्दन : **इदं चन्दनं अनुलेपनं ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः ।।**

पुष्प : **इदं पुष्पं ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः ।।**

तुलसी : **इदं तुलसीदलं ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः ।।**

तिल जौ : **एते यवतिलाः ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः ।।**

जल : **एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथाभाग नैवेद्यं ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः।।**

जल : **आचमनीयं ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः ।।**

पुष्पांजलि : **एष पुष्पांजलि ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री विष्णवे नमः ।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्री विष्णो पूजितोसि प्रसीद प्रसन्नो भव क्षमस्व ।।

अब दाहिने हाथ में पान, सुपाड़ी, जायफल, तिल, फूल, चंदन, रूपये (तांबे या चांदी का हो तो अच्छा) जल आदि लेकर बांये हाथ से दाहिने हाथ का गट्टा पकड़ ले और संकल्प करें :-

संकल्प :- **हरिः ॐ विष्णुः विष्णुः हरिः हरिः अद्य एतस्य ब्रह्मणः अह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे मासानां मासोत्तमे आश्विने मासे शुक्ले पक्षे प्रतिपदायां तिथौ .....(दिन का नाम) वासरे ..... (गोत्र) गोत्रस्य ..... (अपना नाम) शर्माऽहं** (स्त्री देव्यहं कहे, ब्राह्मण-शर्माहं, क्षत्रिय-वर्माहं, वैश्य-गुप्तोहं और शूद्र-दासोहं) **अहं ममात्मनः सपुत्र स्त्री बान्धवस्य श्रीदुर्गा अनुग्रहतो ग्रहकृत राजकृत सर्वविध पीड़ा निवृत्ति पूर्वक दीर्घायु शरीर आरोग्य कामनया धन धान्य बल पुष्टि कीर्त्ति यशादि लाभार्थं सर्वदा**

हर्ष विजय कामनया सर्वाभिष्ट सिद्ध्यर्थं सर्वापत् निवारणार्थं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवता प्रीत्यर्थं नवरात्र व्रतं पूजनं ग्रंथोकोक्त विधिपूर्वकं नवावृत्ति श्री दुर्गा सप्तशती पाठं यथा संख्यक नवार्ण मंत्र जपं च करिष्ये ।।

उपरोक्त मंत्र पढ़कर समस्त वस्तुएं माता के समक्ष रख दें । नौ दिनों में कुल मिलाकर एक बार सप्तशती पाठ करने वाले नवावृत्ति के स्थान पर एकावृत्ति कहें । थोड़ा अक्षत लेकर अगला मंत्र पढ़े :-

ॐ यजाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति । दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तं मे मनः शिव संकल्पं अस्तु ।।

अक्षत संकल्प की वस्तुओं पर दे दें ।

फूल, चंदन, अक्षत ले गुरु प्रार्थणा करे :-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देव महेश्वरः । गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया । चक्षुर्निर्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अखण्ड दीप को जला लें, मौली बांध दे, चंदन लगा दें । अक्षत फूल, चंदन लेकर अगले मंत्र से अखण्ड दीप की पूजा करें :-

ॐ भो दीप देवरूपः त्त्वं कर्मसाक्षीः अविघ्नकृत्। यावत् व्रत समाप्तिः स्यात् तावत् त्त्वं सुस्थिरो भव।।
ॐ दीपस्थ देवतायै नमः।।

गणेशाऽम्बिका पूजन

कटोरी में रखे हुए सुपाड़ियों पर गणेशाऽम्बिका का आवाहन कर पूजन करे :-

अक्षत : ॐ गणेशाऽम्बिके इह आगच्छतम् इह तिष्ठतम् ।।
जल : एतानि पाद्यार्घ आचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ गणेशाश्ऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
चन्दन : इदं चन्दनं अनुलेपनं ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
पुष्प : इदं पुष्पं ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
अक्षत : इदं अक्षतं ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
दूभी : इदं दूर्वादलं ॐ गणेशाय नमः ।।
सिन्दूर : इदं सिन्दूरं ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
जल : एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथाभाग नैवेद्यं ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
जल : आचमनीयं ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।
पुष्पांजलि : एष पुष्पांजलि ॐ गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ।।

कलश स्थापन विधि

भूमि स्पर्श : ॐ भूरसि भूमिरसि अदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धत्री पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ग्गूं ह पृथिवीं मा हि ग्गूं सीः ।।
गोबर स्पर्श : ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।
सप्तधान्य : ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनु प्रसिति मायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ।।
कलश : ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन् त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरु धारा पयस्वतीः पुनर्मा विशताद्रयिः ।।
जल : ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदनमासीद ।।
सप्तमृत्तिका : ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।
सवौषधि : ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रुनावहा शतं धामानि सप्त च।।
पञ्चरत्न : ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्य क्रमीत् । दधद्रत्नानि दासुषे ।

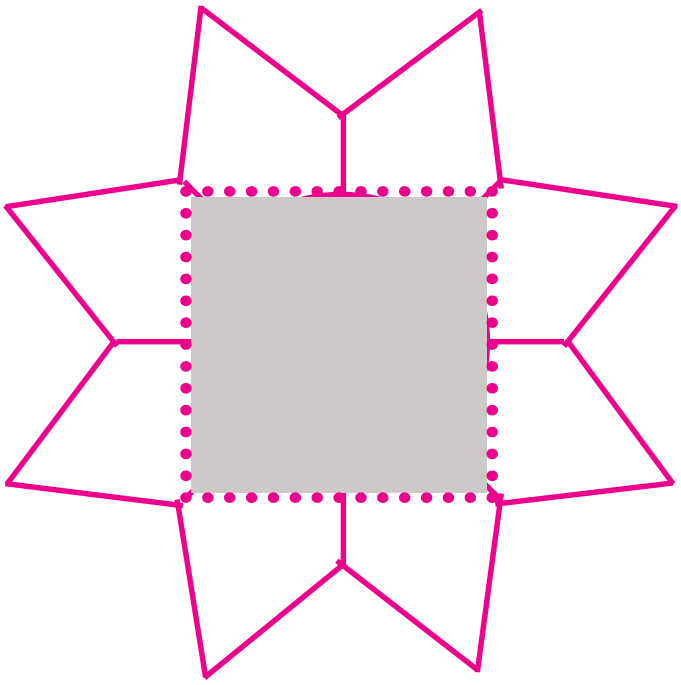

यह अष्टदल है, चौरठ (पीसी हुई चावल) सिंदूर आदि से धरती पर बना लें। इस पर मिट्टी की एक वेदी बनाएं जिसकी लम्बाई-चौड़ाई 1 हाथ और ऊंचाई 4 अंगूल हो । वेदी पर जौ की बुआई पहले ही कर लें, फिर सप्तधान्य छिड़क कर जल छिड़कें और प्रतिदिन सींचे। उसके बाद सुन्दर और सिंदूर आदि से सजाया हुआ कलश देकर कलश में जल भर दें । कलश में सप्तमृत्तिका, सर्वौषधी, पंचरत्न, पान, सुपारी दूभी, जायफल, द्रव्य देकर पंचपल्लव या आम्रपल्लव दें, कलश में लाल कपड़ा लपेट दें । फिर पूर्णपात्र (कटोरी या ढ़कनी जिसमें चावल भरा हो, सुपाड़ी,हल्दी,द्रव्य भी हो) देकर वस्त्र, मौली से सुसज्जित नारियल दे दें। मंत्र पढ़ सकें तो समंत्र कलशस्थापन करें अन्यथा बिना मंत्र के भी स्थापित कर के पूजा कर लें।

सुपाड़ी और जायफल : ॐ या फलिनीर्या ऽफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी । बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चत्व ग्गूं हसः ।।

द्रव्य : ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

दूभी : ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

पान : ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।।

आम्र पल्लव : ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन । सशस्ति अश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।

पूर्णपात्र : ॐ पूर्णा दर्वी परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा ईषमूर्ज ग्गूं शतक्रतो ।।

नारियल : ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्ण न्निषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ।।

दीप : ॐ अग्निर्ज्योतिः ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा अग्नि वर्चो ज्योतिः वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिः वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

प्राणप्रतिष्ठा : ॐ मनो जूतिर्जुषतां आज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ग्गूं समिमं दधातु

विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ ।।

अक्षत : कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः । अत्र गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी तथा ।।
आयान्तु मम पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः ।। ॐ वरुणादि देवताः इहाऽगच्छत इहतिष्ठत ।।

जल : एतानि पाद्यार्घ आचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ शान्तिपूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः।। (आवाहन प्रथम दिन ही करना है अन्य दिनों नहीं, दूसरे दिने से अगले मंत्र से पूजा आरम्भ करें)

पंचामृत : इदं पंचामृत स्नानं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

जल : इदं शुद्धोदकं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

चन्दन : इदं चन्दनं अनुलेपनं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

पुष्प : इदं पुष्पं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

माला : इदं पुष्पमाल्यं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

बेलपत्र : इदं बिल्वपत्रं पुष्पं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

अक्षतः इदं अक्षतं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

जल : एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूल यथाभाग नैवद्यं ॐ शान्तिपूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः।।

जल : आचमनीयं ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

पुष्पांजलि : एष पुष्पांजलि ॐ शान्ति पूर्ण कलशस्थ वरुणादि देवताभ्यो नमः ।।

इसके बाद अक्षत, फूल, बेलपत्र, चंदन आदि लेकर भैरव का ध्यान करते हुए माता के पास ही रख दें :-

ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

दुर्गा पूजा

दुर्गा माता की यदि नई प्रतिमा हो आवाहन करें, पुरानी हो तो ध्यान से आरम्भ करें । यदि फोटो हो तो प्रतिवर्ष बदलें और आवाहन करें । अक्षत, फूल लेकर अगले मंत्र से प्राणप्रतिष्ठा करें :

प्राणप्रतिष्ठा : ॐ मनोजूतिर्जुषतां आज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ग्गूं समिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ ।। ॐ भूर्भुवः स्वः भगवति श्री दुर्गे देवि सपरिवाय इह आगच्छ इह तिष्ठ ।।

(यदि काली की करते हैं तो **ॐ क्रीं काली इह आगच्छ इह तिष्ठ** पढ़ें । आवाहन प्रथम दिन ही करना है अन्य दिनों नहीं, दूसरे दिने से अगले ध्यान मंत्र से पूजा आरम्भ करें ।)

ध्यान : **ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्ध स्थितां भीषणां**
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ता भिरा सेवितां ।
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।

इदं ध्यान पुष्पं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

(यदि काली की पूजा करते हों तो **ॐ क्रीं काल्यै नमः** से पूजा करें ।)

जल : एतानि पाद्यार्घ आचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

पंचामृत : इदं पंचामृत स्नानं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

जल : इदं शुद्धोदकं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

चन्दन : इदं चन्दनं अनुलेपनं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

पुष्प : इदं पुष्पं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

माला : इदं पुष्पमाल्यं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

अक्षतः इदं अक्षतं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

बेलपत्र : इदं बिल्वपत्रं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

धूप : इदं धूपं आघ्रापयामि ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

दीप : इदं दीपं दर्शयामि ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

नैवेद्य : एतानि नानाविध नैवेद्यानि ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

जल : आचमनीयं गंगा जलं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

पान : मुखवासार्थे ताम्बूल पूंगीफलं एला लवंगादि युतं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

द्रव्य : पूजा साफल्यार्थे दक्षिणां द्रव्यं ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

पुष्पांजलि : ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गेदेवि नमोऽस्तुते ।।
एष मंत्र पुष्पांजलि ॐ सपरिवारायै भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुर्गा देव्यै नमः ।।

जल, अक्षत, फूल, चंदन आदि से श्री दुर्गा सप्तशती की पूजा भी कर ले :

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै शततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ।।

इसी तरह जल, अक्षत, फूल, चंदन आदि से माला की भी पूजा करे : **ॐ ऐं ह्री अक्षमालिकायै नमः।।**

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि । चतुर्वर्गः त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।

इसके बाद सप्तशती का पाठ करे । यदि प्रतिदिन एक आवृत्ति पाठ करना हो तो आद्योपांत करना चाहिए । लेकिन समयाभाव के कारण बहुत श्रद्धालु प्रतिदिन सम्पूर्ण पाठ न कर नवरात्र में एकावृत्ति पाठ करते हैं । नवरात्र में एक आवृत्ति पाठ करना हो तो उसके लिए सात दिनों में 13 अध्याय पाठ करने का विधान बताया गया है जिसका क्रम इस प्रकार हैः 1, 2, 1, 4, 2, 1, 2 । अतः जिन साधकों को एकावृत्ति पाठ करने की इच्छा हो वो पहले दिन शापोद्धार, कवच, अर्गला कीलक, रात्रिसूक्त, पाठकर नवार्ण मंत्र का जप करे। दूसरे दिन पहला अध्याय, तीसरे दिन दूसरा, तीसरा, चौथे दिन चौथा, पांचवें दिन पांचवा, छठा सातवां और आठवां, छठे दिन नौवां, दशमा, सातवें दिन ग्यारहवां, आठवें दिन बारहवां, तेरहवां अध्याय नौवें दिन देवीसूक्त तीनों रहस्य आदि पाठ करे । प्रति दिन पाठ के पहले व बाद में नवार्णजप अवश्य करे एवं आरंभ या अंत में सिद्धकुंञ्जिकास्तोत्र का पाठ भी एक बार करे । यदि किसी तिथि का लोप हो तो उस दिन का पाठ लोप तिथि वाले दिन ही कर लें । नित्य इसी क्रम से पूजनादि करना चाहिए । आवाहन मंत्र (जो रेखांकित कर दिये गए है) सिर्फ पहले दिन ही पढ़ेंगे अन्य दिनों जल से पूजा आरम्भ होगी, अर्थात् आवाहन मात्र पहले दिन होगा और विसर्जन अंतिम दिन । रात में आरती के बाद फूल, अक्षतादि जो कुछ भी दिन में चढ़ाया गया हो उसे हटा लेना चाहिए, क्योंकि वह सब निर्माल्य हो जाता है और निर्माल्ययुक्त देवता श्राप देने वाले हो जाते हैं ।

आवृत्ति विधान :- ग्रहशान्ति-5, महाभय निवारण-7, कामनासिद्धि व वैरिहानि-12, वैरी व स्त्री वशीकरण-14, सुख व श्रीकामना-15, पुत्र-पौत्र-धनादि वृद्धि-16, राजभय निवारण-17, वैरी उच्चाटन-18, महाव्रण निवारण-20, बन्धनमुक्ति-25 जाति-कुल-आयु-धन पर संकट, शत्रु-रोगादि वृद्धि एवं अनेकों उत्पात्त के शमन हेतु - 100 आवृत्ति पाठ करना चाहिए।

नवदुर्गा के नौ स्वरूपों के नौ मंत्र हैं । प्रतिदिन एक-एक मंत्र से माता को फूल, चंदन, बेलपत्र अक्षत आदि चढ़ा दें। अर्थात् पहले दिन शैलपुत्री, दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी, तीसरे दिन चन्द्रघण्टा, चौथे दिन कूष्मांडा, पांचवें दिन स्कन्तमाता, छठे दिन कात्यायनी, सातवें दिन कालरात्रि, आठवें दिन महागौरी और नौवें दिन सिद्धिदात्री के निमित्त तत्तत् मंत्रों से चढ़ाएं।

नवदुर्गा पूजन मंत्र

शैलपुत्री : वन्दे वाञ्छित लाभाय चन्द्रार्ध कृतशेखरां । वृषारूढ़ां शूल धरां शैलपुत्री यशस्विनीं ।।
ब्रह्मचारिणीः दधाना करपात्राभ्यां अक्षमाला कमण्डलू । देवी प्रसीदतु मयि बह्मचारिण्यनुत्तमा ।।
चन्द्रघण्टा : पिण्डज प्रवरारूढ़ा चन्द्र कोपास्त्रकैर्युता । प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ।।
कूष्मांडा : सुरासम्पूर्ण कलशं रुधिराप्लुतमेव च । दधाना हस्तपात्राभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ।।
स्कन्दमाताः सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रित करद्वया । शुभदास्तु सदा देवी स्कन्तमाता यशस्विनी।।
कात्यायनीः चन्द्रहासोज्ज्वल करा शार्दूलवर वाहना । कात्यायनी शुभं दद्यादेवी दानवघातिनी ।।
कालरात्रि : एकवेणी जपाकर्ण पूर नग्ना खरास्थिता । लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्त शरीरिणी ।।
वामपादोल्लसल्लोह लता कण्टकभूषणा । वर्धनमूर्ध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ।।
महागौरी : श्वेते वृषे समारूढ़ा श्वेताम्बरधरा शुचिः । महागौरी शुभं दद्याम् महादेव प्रमोददा ।।
सिद्धिदात्रिः सिद्धगन्धर्व यक्षाद्यैः असुरैः अमरैरपि । सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदासिद्धिदायिनी ।।

नवकुमारी पूजन मंत्र

कुमारी : कुमारस्य च तत्त्वानि सृजत्यपि लीलया । कादीनपि च देवांस्तां कुमारीं पूजयाम्यहम् ।।
त्रिमूर्ति : सत्त्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्या तैर्हि नानास्वरूपिणी । त्रिकालव्यापिनी शक्तिस्त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ।।
कल्याणी : कल्याणकारिणीनित्यं भक्तानांपूजितानिशम् । पूजयामि च तांभक्त्या कल्याणीं सर्वकामदाम्।।
रोहिणी : रोहयन्ती च बीजानि प्राग्जन्मसंचितानि वै। या देवी सर्वभूतानां रोहिणीं पूजयाम्यहम् ।।
कालिका : काली कालयते सर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम् । कल्पान्तसमये या तां कालिकां पूजयाम्यहम् ।।
चण्डिका : चण्डिकांचण्डरूपां च चण्डमुण्डविनाशिनीम्। तां चण्डपापहरिणीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ।।
शाम्भवी : अकारणात् समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता । यस्यास्तां सुखदां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ।।
दुर्गा : दुर्गात्त्रायति भक्तं या सदा दुर्गार्तिनाशिनी । दुर्ज्ञेया सर्वदेवानां तां दुर्गां पूजयाम्यहम् ।।
सुभद्रा : सुभद्राणि च भक्तानां कुरुते पूजिता सदा । अभद्रनाशिनीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ।।

दो वर्ष - कुमारी, तीन वर्ष - त्रिमूर्ति, चार वर्ष - कल्याणी, पांच वर्ष - रोहिणी, छह वर्ष - कालिका
सात वर्ष - चण्डिका, आठ वर्ष - शाम्भवी, वर्ष - दुर्गा, दश वर्ष - सुभद्रा ।

चारों वर्ण की कन्या पूजन का फल - ब्राह्मण कन्या - समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति, क्षत्रिय कन्या - विजय प्राप्ति, वैश्य कन्या - व्यापारादि में लाभ, शूद्र कन्या - मोक्षप्राप्ति। ब्राह्मण व क्षत्रिय मात्र ब्राह्मण वर्ण की कन्या का पूजन करे। वैश्य - ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य तीनों वर्ण की कन्याओं का पूजन करे तथा शूद्र के लिए चारों वर्ण की कन्यायें पूजनीय हैं ।

श्री भगवती स्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे जय पापविनाशिनि बहुफलदे ।
जय शुम्भ निशुम्भ कपालधरे प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ।। 1 ।।
जय चन्द्र दिवाकर नेत्रधरे जय पावक भूषित वक्त्र वरे ।
जय भैरव देह निलीनपरे जय अन्धक दैत्य विशोषकरे ।। 2 ।।
जय महिषविमर्दिनि शूलकरे जय लोक समस्तक पापहरे ।
जय देवि पितामह विष्णुनते जय भास्कर शक्र शिरोऽवनते ।। 3 ।।
जय षण्मुख सायुध ईशनुते जय सागरगामिनि शम्भुनुते ।
जय दुःख दरिद्र विनाशकरे जय पुत्र कलत्र विवृद्धिकरे ।। 4 ।।
जय देवि समस्त शरीरधरे जय नाक विदर्शिनि दुःखहरे ।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्षकरे जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिवरे ।। 5 ।।
एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः । गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ।। 6 ।।

निशा पूजा (जगरणा) की रात्रि में भी अच्छी तरह से पूजा करनी चाहिए । वस्त्र, आभूषण, शृंगार सामग्री आदि माता को अर्पित करें । अनेक प्रकार के नैवेद्य चढ़ाएं ।

आरती

मंत्र : ॐ इद ग्गूं हविः प्रजजनं मे अस्तु दशवीर ग्गूं सर्वगण ग्गूं स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसनि अभयसनि । अग्निं प्रजां बहुलां मे करोतु अन्नं पयो रेतु अस्मासु धत् ।।

अम्बे तू है जगदम्बे कालि जय दुर्गे खप्पर वाली तेरे ही गुण गाए भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरति ।।1।
तेरे भक्त जनों पर माता भीर परी है भारी । दानव दल पे टूट परो मां करके सिंह सवारी ।।
सौ सौ सिंहों से तू बलशाली है दश भुजाओं वाली दुखियों के दुखरे निबारती। ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरति ।।2।।
मां बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता । पूत कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता ।।
सबपे करुणा दरशाने वाली अमृत बरसाने वाली दुखियों के दुखरे निबारती । ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरति ।।3।।
नहीं मांगते धन और दौलत न चांदी न सोना । हम तो मांगे मां तेरे मन में इक छोटा सा कोना ।।
सबकी बिगरी बनाने बाली लाज बचाने बाली सतियों के सत को संवारती । ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरति ।।4।।

पुष्पांजलि : ॐ यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

सेवन्तिका बकुल चम्पक पाटलाब्जैर्पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः ।
बिल्वप्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वरी मे प्रसीद ।।

एष पुष्पांजलि ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री दुगदिव्यै नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः।।

हवन

नवमी को हवन करना चाहिए । नित्यप्रति की भाँति पूजा-पाठ-जप आदि कर लें । यदि घर पक्की हो तो वेदी बना लें अथवा हवन कुण्ड की व्यवस्था कर लें और यदि कच्ची हो तो त्रिकोण कुण्ड या वेदी बनाकर अथवा धरती पर ही जैसी सुविधा हो हवन कर सकते हैं । पूजा गृह के मध्य भाग में हवन करने का प्रयास करना चाहिए और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कलश या माता आदि से आग की दूरी पर्याप्त हो । घृत, शाकल्य, खीर आदि हवन की समस्त वस्तुओं को यथास्थान रख लें । गरीगोला में छेद कर उसमें घी भर दें व पैसा दे दें और लाल कपड़ा लपेट दें । नवग्रह लकड़ी को क्रम से सजा लें । अग्नि जला लें और अक्षत, फूल, नैवेद्य आदि प्रज्वलित अग्नि में अर्पण कर फूल लेकर उनकी प्रार्थना करे -

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । हिरण्यवर्णं अनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ।।

कटोरी में घी, स्रुवा, प्रोक्षणीपात्र, नवग्रह-समिधा आदि रख लें, हवनानुसार शाकल्य, पायस(खीर) आदि बना ले।
मंत्र के साथ अग्नि में स्रुवा से घृताहुती देकर स्रुवा से कुछ घृत(अवशेष) का प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे ।

1. ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये ।। - (मानसिक स्मरण, यह मंत्र बोले नहीं)
2. ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय ।। ॐ 3. ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये ।।
4. ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय ।। 5. ॐ भूः स्वाहा । इदं अग्नये ।।
6. ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे ।। 7. ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय ।।

नवग्रह होम :- प्रत्येक ग्रह के समिधा के दोनों छोर को घी में भिंगोकर होम करे -

नवग्रह : सूर्य - अकान :- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय स्वाहा ।।
चन्द्र - पलाश :- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे स्वाहा ।।
मंगल - खैर :- ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय स्वाहा ।।
बुध - अपामार्ग :- ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय स्वाहा ।।
गुरु - पीपल :- ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे स्वाहा ।।
शुक्र - गुल्लड़ :- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय स्वाहा ।।
शनि - शमी :- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय स्वाहा ।।
राहु - दूभी :- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे स्वाहा ।
केतु - कुश :- ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे स्वाहा ।।

दशदिक्पाल को आहुति दे : 1. ॐ इन्द्राय स्वाहा । 2. ॐ अग्नये स्वाहा । 3. ॐ यमाय स्वाहा । 4. ॐ निर्ऋतये स्वाहा । 5. ॐ वरुणाय स्वाहा । 6. ॐ वायवे स्वाहा । 7. ॐ सोमाय स्वाहा । 8. ॐ ईशनाय स्वाहा । 9. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । 10. ॐ अनन्ताय स्वाहा ।

ॐ लोक पालेभ्यो स्वाहा। ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा। ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा। ॐ कुल देवताभ्या स्वाहा।

ॐ इष्ट देवताभ्यो स्वाहा। ॐ ग्राम देवताभ्यो स्वाहा। ॐ स्थान देवताभ्यो स्वाहा। ॐ वास्तु देवताभ्यो स्वाहा।

इसके बाद नवार्ण मंत्र या **ॐ जयन्ती मंगला काली ..... नमोऽस्तुते** या **ॐ नमो देव्यै महा ..... स्मताम्** मंत्र से अथवा सम्पूर्ण सप्तशती का पाठ कर शाकल्य या पायस से होम करना चाहिए । यह होम पाठ और जप का दशांश होगा अर्थात् आहूति की संख्या पाठ और जप संख्या का दशवां भाग होना चाहिए । यथा सप्तशती में 700 श्लोक हैं जिसका नौ दिन पाठ करने पर 6300 संख्या होती है अर्थात सम्पूर्ण सप्तशती या किसी अन्य मंत्र से 630 या 700 आहूति देनी चाहिए । इसके साथ ही नवार्ण मंत्र एवं अन्य जो कोई भी मंत्र जप किया गया हो उस कुल जप संख्या की भी दशवां भाग आहूति देनी चाहिए ।

शाकल्य : तिलार्द्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्द्धं तु यवम् । यवार्द्धं शर्करा प्रोक्तं सर्वार्द्धं घृतं स्मृतम् ।।

तिल का आधा चावल, चावल का आधा जौ, जौ का आधा शक्कड़ व सबों के योग का आधा घी मिलाकर शाक्ल्य बनाना चाहिए । इसके अतिरिक्त कमलगट्टा, जटामांसी, पंचमेवा, केला आदि भी शाकल्य में मिलाया जाता है । बहुत लोग शाकल्य में धूप भी मिलाते हैं लेकिन शाकल्य में धूप नहीं मिलाना चाहिए । धूएं में हवन नहीं करना चाहिए इसलिए आग को पूरी तरह प्रज्जवलित करना चाहिए । हवन के आग को पंखा, सूप, हाथ या किसी भी अन्य वस्तुओं से नहीं झलना चाहिए बल्कि किसी छेद युक्त बांस की कड़ची से फूँकना चाहिए । दशांश हवन के बाद माष बलि हेतु उड़ीद और दही मिलाकर एक पात्र में रख दे और एक दीप जला दे अक्षत, फूल जल आदि बीज मंत्र से ही दे दे ।

इसके बाद पूर्णाहुति (घृतपूरीत सद्रव्य और लाल कपड़ा में लपेटा गड़ीगोला) स्रुवा में लेकर खड़ा होकर दे :

पूर्णाहुति : ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरऽमृत आजातमग्निम् । कवि ग्गूं सम्राजमतिथिं जनानाम् आसन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ।।

फिर स्रुवा से ही घृतधारा दे दें :

वसोर्द्धारा : ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ।।

वसोर्धारा के बाद स्रुवा के अधोभाग में भस्म लगाकर मस्तकादि में लगावे :

ललाट : ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ।

गला : ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं।

दाहिना बांह : ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं।

हृदय : ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषं।

यदि किसी अन्य को लगाऐ तो तन्नो के स्थान पर तत्तो कहे ।

अग्नि के चारों ओर जल घुमा कर आचमन कराकर आरति कर आचमन देकर पुष्पांजलि दे दे । फिर प्रदक्षिणा, साष्टांग प्रणाम व क्षमा याचना करे । तिल, जल और दक्षिणा द्रव्य लेकर दक्षिणा कर ले :

दक्षिणा : ॐ अद्य कृतैतत् हवन कर्म प्रतिष्ठार्थं एतावत् (यद्दीयमान यदि रूपये नहीं लिये हो तो पढ़ें**) द्रव्य मूल्यक हिरण्यं अग्नि दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुं अहं उत्सृज्ये ।।**

सप्तशती हवन विशेष

सप्तशती के प्रतिश्लोक से हवन करने वालों के लिए एक विशेषता है कि प्रति अध्याय के अंत में एक विशेषाहुति होती है । इसमें कुछ विशेष हवन सामग्री भी लगती है । जो श्रद्धालु सम्पूर्ण सप्तशती से हवन करना चाहें पूर्णाहुति से पहले ही करें और प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार से विशेषाहुति भी दें :

प्रथम अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, मधु ।

ॐ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यै महाकालिकायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

द्वितीय अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, मधु ।

ॐ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्री महालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

तृतीय अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, मधु ।

ॐ ह्रीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै

लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्री महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

चतुर्थ अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, मिश्री, खीर, बेल का गुदा ।

ॐ ह्रीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्री महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

पंचम अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, मिश्री, कपूर, फूल-फल।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णुमायादि चतुर्विंशद्देताभ्यो महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

षष्ठ अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, भोजपत्र, कुम्हर का टुकड़ा ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।।

सप्तम अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, जायफल, कुम्हर का टुकड़ा ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै कर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डा देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

अष्टम अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, रक्तचन्दन, मधु ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै अष्टमातृ सहितायै रक्ताक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

नवम अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, बेल का गुदा, ईख का टुकड़ा ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

दशम अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, बेल का गुदा, बिजौड़ा नींबू ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सिंहवाहनायै शूलपाशधारिण्यै अम्बिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

एकादश अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, खीर, फुल, अनाड़, शक्कड़, कर्पूर ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़ वाहिन्यै नारायणी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

द्वादश अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा-1, सुपारी-1, लौंग-2, इलायची, गुग्गल, केला व ऋतुफल, खीर, कस्तूरी ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै वरप्रदायै वैष्णवीदेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

त्रयोदश अध्याय : पान, शाकल्य, कमलगट्टा–1, सुपारी–1, लौंग–2, इलायची, गुग्गल, उजला फूल, फल, शमीपत्र ।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री विद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

दशमहाविद्या स्तोत्र

आदिशक्ति त्वमसि काली मुण्डमाला धारिणी । त्वमसि तारा मुण्डहारा विकट संकटहारिणी ।।
त्रिपुरसुन्दरि आदिका त्वं षोडशी परमेश्वरी । सकलमंगल मूर्त्तिरसि जगदम्बिके भुवनेश्वरी ।।
त्वमसि माता खड्गहस्ता छिन्नमस्ता भगवती । त्वमसि त्रिपुरभैरवी मातस्त्वमसि भौमावती ।।
मातरसि बगलामुखी त्वं दुष्टबुद्धि विनाशिनी। त्वमसिमातंगी त्वमसि कमलात्मिकाम्बुज वासिनी।।
दशविद्या महाविद्या त्वमसि भुवि बहुसिद्धिदा । प्रेमदेहि पदाम्बुजे त्वेना परम याचे वरम् ।।

दुर्गा गायत्री : ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि । तन्नो दुर्गाः प्रचोदयात् ।।
काली गायत्री : ॐ आद्यायै विद्महे परमेश्वर्यै धीमहि । तन्नः काली प्रचोदयात् ।।
रुद्र गायत्री : ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात ।।

तिथि घंटा:मिनट	**दि**	**नक्षत्र** घंटा:मिनट	**योग**	**क.**	**चन्द्र** राशि	**सूर्य.** उदय	**सूर्य** अस्त.	**आंग्ल** दिनांक	**नवरात्र पंचांग 2014 ई0 संवत–2071 शक–1936, बेगूसराय, सितं.अक्टू.**
1.13:22	गु	हस्त.19:39	ब्रह्म	बव	कन्या	5:36	17:38	25	शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलशस्थापन, शैलपुत्रीपूजा।
2.14:38	शु	चित्रा.21:23	ऐन्द्र	कौ.	8:34	5:37	17:37	26	.श्रीरेमन्त पूजा, ब्रह्मचारिणी पूजा ।
3.15:27	श	स्वा.22:42	वैधृति	गर	तुला	5:37	17:36	27	श्रीगणेश चौथ व्रत, चन्द्रघण्टा पूजा ।
4.15:49	र	विशा.23:32	विष्कु.	वि.	17:23	5:37	17:35	28	कूष्माण्डा पूजा । * एकादशी 28:32 तक ।
5.15:40	सो.	अनु.23:54	प्रीति	बा.	वृश्चि	5:38	17:34	29	स्कन्दमाता पूजा ।
6.15:01	मं	ज्ये.23:44	आयु.	तै.	23:44	5:38	17:32	30	गजपूजा, बिल्वाभिमंत्रण, कात्यायनी पूजा ।
7.13:49	बु	मूल.23:03	सौभा.	व.	धनु	5:39	17:31	1	अक्टूबर. पत्रिकाप्रवेश, कालरात्री पूजा, निशापूजा (जगरणा) ।
8.12:08	गु	पूषा.21:53	शोभन	बव	27:31	5:39	17:30	2	महाष्टमी व्रत, महानवमी व्रत, महागौरी पूजा ।
9. 9:58	शु	उषा.20:17	अतिगंड	कौ.	मकर	5:39	17:29	3	सिद्धिदात्री पूजा, त्रिशूलिनी पूजा, हवन ।
10.7:24	श	श्र.18:19	सुकर्मा	ग.	29:14	5:40	17:28	4	विजयादशमी, अपराजिता पूजा, देवी विसर्जन, जयन्तीधारण *

दुर्गा आगमन : दोला, फल : मृत्युतुल्य कष्ट । दुर्गा गमन : चरणायुध, फल : विकलता प्राप्ति ।

श्रवण युत दशमी तिथि का योग होने पर विजयादशमी उत्तम माना गया है : श्रवणेन दशम्यां तु प्रणिपत्य विसर्जयेत्। इसी तरह ज्येष्ठा नक्षत्र और षष्ठी तिथि युति के कारण बिल्वाभिमंत्रण 30/9/14 को ही उपर्युक्त है ।

तिथि घंटा:मिनट	दि	नक्षत्र घंटा:मिनट	योग	क. चन्द्र राशि	सूर्य. उदय	सूर्य अस्त.	आंग्ल दिनांक	नवरात्र पंचांग 2015 ई0 संवत-2072 शक-1937, बेगूसराय, अक्टूबर.
1.--:-- .	मं	चित्रा.28:38	वैधृति	किं. क.15:11	5:44	17:19	13	शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलशस्थापन, शैलपुत्रीपूजा।
1.08:02	बु	स्वा.--:--	विष्कु.	बव तुला.	5:44	17:18	14	प्रतिपदा तिथिमल,
2.10:12	गु	स्वा.07:20	प्रीति.	कौ. 27:10	5:45	17:18	15	श्रीरेमन्त पूजा, ब्रह्मचारिणी पूजा ।
3.12:01	शु	विशा.9:43	आयु.	ग. वृश्चि..	5:45	17:17	16	श्रीगणेश चौथ व्रत, चन्द्रघण्टा पूजा ।
4.13:24	श	अनु.11:42	सौभा.	वि. वृश्चि.	5:46	17:16	17	कूष्माण्डा पूजा ।
5.14:18	र	ज्ये.13:12	शोभ.	बा. 13:12	5:46	17:15	18	स्कन्दमाता पूजा ।
6.14:39	सो	मूल.14:10	अतिगं.	तै. धनु	5:47	17:14	19	बिल्वाभिमंत्रण, कात्यायनी पूजा, गजपूजा ।
7.14:23	मं	पूषा.14:34	सुक.	व. 20:34	5:47	17:13	20	पत्रिकाप्रवेश, कालरात्री पूजा, निशापूजा(जगरणा),
8.13:30	बु	उषा.14:20	धृति	वि. मकर	5:48	17:12	21	महाष्टमीव्रत, महानवमी व्रत, महागौरी पूजा ।
9.11:58	गु	श्र.13:28	शूल	कौ. 24:49	5:48	17:11	22	सिद्धिदात्री पूजा, त्रिशूलिनी पूजा, हवन ।
10.9.51	शु	धनि.12:02	गण्ड	ग. कुम्भ	5:49	17:10	23	विजयादशमी, अपराजिता पूजा, देवी विसर्जन, जयन्तीधारण।

दुर्गा आगमन : घोड़ा, फल : छत्रभंग । दुर्गा गमन : हाथी, फल : शुभ वर्षा ।

अशौच निर्णय : "आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकं" यदि व्रतारम्भ पूर्व अशौच हो गया हो तो उन्हें नवरात्र व्रतादि नहीं करना चाहिए तथापि यदि माता की भक्ति में प्रगाढ़ता हो और सान्निध्य प्राप्त हो तो संकल्प-पूजा-पाठादि रहित केवल ध्यान, भजन, कीर्तन करते हुए उपवास किया जा सकता है । यदि संकल्प करने के पश्चात् अशौच हो जाए तो विसर्जन पर्यन्त अशौच (पृष्ठ 46 पर)

तिथि घंटा:मिनट	दि	नक्षत्र घंटा:मिनट	योग	क. चन्द्र राशि	सूर्य. उदय	सूर्य अस्त.	आंग्ल दिनांक	नवरात्र पंचांग 2016 ई0 संवत-2073 शक-1938, बेगूसराय, अक्टूबर.
1.07:46	र	चित्रा.26:44	ऐन्द्र	बव. क.13:19	5:39	17:30	02	शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलशस्थापन, शैलपुत्रीपूजा।
2.10:05	सो	स्वा.--:--	वैधृति	कौ तुला.	5:40	17:29	03	श्रीरेमन्त पूजा, ब्रह्मचारिणी पूजा ।
3.12:34	मं	स्वा.05:41	विष्कु.	गर. 25:57	5:40	17:28	04	श्रीगणेश चौथ व्रत, चन्द्रघण्टा पूजा ।
4.15:06	बु	विशा.8:43	प्रीति.	वि. वृश्चिक	5:40	17:27	05	कूष्माण्डा पूजा ।
5.17:32	गु	अनु.11:41	आयु.	बा. वृश्चिक	5:41	17:26	06	स्कन्दमाता पूजा ।
6.19:42	शु	ज्ये..14:25	सौभा.	कौ. 14:25	5:41	17:25	07	बिल्वाभिमंत्रण, कात्यायनी पूजा, गजपूजा ।
7.21:25	श	मूल.16:46	शोभ.	गर धनु	5:42	17:24	08	पत्रिकाप्रवेश, कालरात्री पूजा, निशापूजा (जगरणा) ।
8.22:31	र	पूषा.18:34	अतिगं.	वि..24:55	5:42	17:23	09	महाष्टमी व्रत, महानवमी व्रत, महागौरी पूजा ।
9.22:53	सो	उषा.19:400	सुकर्मा.	बा. मकर	5:43	17:22	10	सिद्धिदात्री पूजा, त्रिशूलिनी पूजा, हवन ।
10.22:28	मं	श्र.20:00	धृति	तै.. मकर	5:43	17:21	11	विजयादशमी, अपराजिता पूजा, देवी विसर्जन, जयन्तीधारण ।

दुर्गा आगमन : हाथी, फल : शुभवृष्टि । दुर्गा गमन : चरणायुध, फल : विकलता प्राप्ति ।

(पृष्ठ 45 का अशौच निर्णय) की प्राप्ति नहीं होती । अतः पूर्ववत् पूजन - पाठादि करते रहना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि परिवार के अन्य अशुद्ध व्यक्तियों से संसर्गादि न हो । उनके हाथ से जलादि ग्रहण न करें । यदि स्त्री रजस्वला हो जाए तो संकल्पित होते हुए भी उन्हें पूजन-पाठादि का आचरण किसी अन्य व्यक्ति से कराते हुए अपने व्रत की विधि को धारण किये रहना चाहिए लेकिन पूजनगृह में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

मिथिलादेशीय विभिन्न प्रकाशनों की उपलब्ध पुस्तक सूची

1. मिथिलादेशीय सुगम श्राद्ध विधि	सं0: पं0 दिगम्बर झा	प्र0: प्रज्ञा प्रकाशन
2. शक्ति साधना	सं0: पं0 दिगम्बर झा	प्र0: प्रज्ञा प्रकाशन
3. मिथिलादेशीय दुर्गा पूजन पद्धति	सं0: पं0 श्री अजय मिश्र	प्र0: मिथला पब्लिकेशन
4. मिथिलादेशीय श्री सत्यनारायण पूजा पद्धति		
5. मधुश्रावणी व्रत कथा		
6. सोम, मंगल, गुरु आ शुक्र व्रत कथा		
7. संध्या तर्पण छन्दोग आ वाजसनेयि		
8. सदाचार छन्दोग आ वाजसनेयि		
9. श्री वागीश्वरी-यक्षणम्	सं0: पं0 पंकज झा	
10.श्री वैद्यनाथार्चनम्	सं0: पं0 पंकज झा	
	अप्रकाशित पुस्तक	
11. मत-सम्मत	सं0: पं0 दिगम्बर झा	प्र0: प्रज्ञा प्रकाशन

इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु अर्थ की आवश्यकता है, सक्षम व्यक्ति सहयोग कर सकते हैं :- 9279259790.

ज्योतिषं वेदानां चक्षुः

जन्मपत्री, कुण्डली मिलान एवं अन्य ज्योतिषीय परामर्श के लिए सम्पर्क करें - 9279259790 .

जन्मपत्री (एक पृ.) - दक्षिणा : 551/ रु.
जन्मपत्रिका - दक्षिणा : 1151/ रु.
सप्तवर्गी जन्मपत्रिका - दक्षिणा : 1551/ रु.
कुण्डली मिलान - दक्षिणा : 551/ रु.
प्रश्न विचार - दक्षिणा : 1151/ रु.
ज्योतिषीय परामर्श - (दक्षिणा रहित)
भूमि परीक्षा - दक्षिणा : 1151/ रु.